IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत की विदेश नीति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की प्रासंगिकताः

(पड़ोसी देशों के संदर्भ में)

डॉ. संजय कुमार यादव
सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञानं
शासकीय महाविद्यालय करतला (छ. ग.)

सार (Abstract)

महाउपनिषद में वर्णित "वसुधैव कुटुम्बकम्" भारतीय चिंतन परंपरा का एक महत्वपूर्ण और सार्वभौमिक सिद्धांत है, जिसका आशय सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखना है। समकालीन अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में यह विचार भारत की विदेश नीति, वैश्विक कूटनीति तथा मानवीय दृष्टिकोण का एक प्रमुख आधार बनकर उभरा है। वर्तमान समय में जब विश्व आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, महामारी तथा आर्थिक विषमताओं जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब यह सिद्धांत सहयोग, समन्वय और वैश्विक संतुलन को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध हो सकता है। प्रस्तुत शोधपत्र में इस अवधारणा के ऐतिहासिक एवं दार्शनिक आधार का विश्लेषण करते हुए भारत की विदेश नीति में, विशेषकर पड़ोसी देशों के साथ संबंधों में, इसके व्यावहारिक उपयोग का अध्ययन किया गया है।

बीज शब्द(Key Word) - वसुधैव कुटुम्बकम्, महाउपनिषद, वैदिक एवं उपनिषदिक ग्रंथ,

प्रस्तावना

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥"
यह श्लोक इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि उदार विचारधारा वाले लोग संपूर्ण मानवता को एक परिवार के रूप में देखते हैं, जबकि संकीर्ण दृष्टिकोण वाले लोग भेदभाव करते हैं। भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही सह-अस्तित्व, करुणा और विश्वबंधुत्व की भावना को विशेष महत्व दिया गया है। वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में यह सिद्धांत भारत की विदेश नीति के एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार के रूप में सामने आया है।

शोध प्रश्न (Research Questions)

1. “वसुधैव कुटुम्बकम्” का दार्शनिक आधार भारतीय परंपरा में कैसे विकसित हुआ?
2. आधुनिक भारत की विदेश नीति में इसका व्यावहारिक स्वरूप क्या है?
3. क्या यह सिद्धांत यथार्थवादी अंतरराष्ट्रीय राजनीति में प्रभावी भूमिका निभा सकता है?
4. वैश्विक संकटों के संदर्भ में इसकी उपयोगिता क्या है?

परिकल्पना (Hypothesis)

- H1: “वसुधैव कुटुम्बकम्” भारत की विदेश नीति के मूल वैचारिक तत्वों में से एक है।
- H2: भारत की बहुपक्षीय कूटनीति इस सिद्धांत को व्यवहारिक रूप प्रदान करती है।
- H3: नैतिकता-आधारित कूटनीति दीर्घकालिक शांति एवं स्थिरता को प्रोत्साहित कर सकती है।

अनुसंधान पद्धति (Research Methodology)

यह अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) पद्धति पर आधारित है, जिसमें द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इन स्रोतों में वैदिक एवं उपनिषदिक ग्रंथ, ऐतिहासिक दस्तावेज, सरकारी रिपोर्टें, तथा विभिन्न विद्वानों के शोध-पत्र शामिल हैं।

अध्ययन की सीमाएँ (Limitations)

- यह शोध मुख्यतः साहित्य-आधारित है।
- कूटनीतिक निर्णयों के सभी गोपनीय पहलुओं का विश्लेषण संभव नहीं है।
- अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ निष्कर्षों में भी बदलाव संभव है।

1. ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि

1.1 वैदिक एवं उपनिषदिक आधार

“वसुधैव कुटुम्बकम्” की अवधारणा का मूल महाउपनिषद में मिलता है। इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य में भी मानवता, शांति और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित किया गया है। “सर्वे भवन्तु सुखिनः” जैसे मंत्र इस व्यापक दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

1.2 बौद्ध एवं जैन दर्शन

भगवान बुद्ध ने करुणा और अहिंसा का संदेश देकर विश्वबंधुत्व को सुदृढ़ किया। इसी प्रकार जैन धर्म में अहिंसा और सभी प्राणियों के प्रति समान दृष्टि की अवधारणा इस विचारधारा को और मजबूत करती है।

1.3 सम्राट अशोक की नीतियाँ

कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक द्वारा अपनाई गई नीतियाँ मानवता, सहिष्णुता और शांति की दिशा में महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। उनके शिलालेख नैतिक शासन और धार्मिक सहिष्णुता का संदेश देते हैं।

2. आधुनिक भारत और वसुधैव कुटुम्बकम्

2.1 स्वतंत्रता आंदोलन में प्रभाव

महात्मा गांधी के विचारों में अहिंसा और सत्याग्रह के माध्यम से विश्वबंधुत्व की भावना स्पष्ट दिखाई देती है। उनका दृष्टिकोण सम्पूर्ण मानवता के कल्याण पर केंद्रित था।

2.2 पंचशील सिद्धांत

1954 में भारत और चीन के बीच हुए पंचशील समझौते में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांतों को स्वीकार किया गया, जो "वसुधैव कुटुम्बकम्" की आधुनिक अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है।

3. भारत की विदेश नीति में वसुधैव कुटुम्बकम्

3.1 गुटनिरपेक्ष आंदोलन

भारत ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाते हुए शीत युद्ध के दौरान संतुलन और सहयोग की नीति अपनाई, जिससे शांति और सह-अस्तित्व को बढ़ावा मिला।

3.2 पड़ोसी प्रथम नीति

भारत की "Neighbourhood First" नीति का उद्देश्य अपने पड़ोसी देशों के साथ सहयोगपूर्ण और स्थिर संबंध स्थापित करना है। यह नीति पारस्परिक सम्मान, संवाद और विकास पर आधारित है।

3.3 जी-20 की अध्यक्षता

भारत ने G20 की अध्यक्षता "One Earth, One Family, One Future" थीम के साथ की, जो "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करती है।

4. वैश्विक सहयोग और मानवीय दृष्टिकोण

यह सिद्धांत विश्व स्तर पर सहयोग और समावेशी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। कोविड-19 महामारी के दौरान भारत द्वारा "Vaccine Maitri" पहल के अंतर्गत विभिन्न देशों को वैक्सीन उपलब्ध कराना इस विचारधारा का व्यावहारिक उदाहरण है।

- **भारत की “Vaccine Maitri” पहल – पड़ोसी देशों को सहायता**

	देश	**वैक्सीन अनुदान (जनवरी 2021)**	**अन्य सहायता (2020)**
1	नेपाल	10 लाख डोज़	HCQ, Paracetamol, टेस्ट किट
2	भूटान	1.5 लाख डोज़	PPE, RT-PCR किट
3	बांग्लादेश	20 लाख डोज़	मेडिकल किट, 3 करोड़ डोज़ का वाणिज्यिक समझौता
4	श्रीलंका	5 लाख डोज़	दवाइयाँ, मेडिकल उपकरण
5	मालदीव	1 लाख डोज़	6.2 टन चिकित्सा सहायता (Mission SAGAR)
6	म्यांमार	15 लाख डोज़	दवाइयाँ, टेस्ट किट
7	अफगानिस्तान	5 लाख डोज़	आवश्यक दवाइयाँ

5. संघर्ष समाधान और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व

यह अवधारणा संवाद और अहिंसक उपायों के माध्यम से विवादों के समाधान पर बल देती है। अंतरराष्ट्रीय संघर्षों में संतुलित और शांतिपूर्ण रुख अपनाना इसी दिशा में एक प्रयास है।

6. सांस्कृतिक कूटनीति और सौम्य शक्ति

भारत ने योग, संस्कृति और परंपराओं के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी सौम्य शक्ति को बढ़ावा दिया है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस इसका एक प्रमुख उदाहरण है।

7. पर्यावरणीय उत्तरदायित्व

“वसुधैव कुटुम्बकम्” की भावना प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी को भी रेखांकित करती है। जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए भारत की सक्रिय भागीदारी इसी दृष्टिकोण को दर्शाती है।

8. मानवीय सहायता और आपदा राहत

भारत ने विभिन्न आपदाओं के दौरान पड़ोसी देशों को राहत और सहायता प्रदान कर क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत किया है। यह मानवीय दृष्टिकोण इस सिद्धांत का व्यवहारिक रूप है।

भारत द्वारा पड़ोसी देशों को आपदा सहायता (2016–2025)

वर्ष	देश	आपदा	भारत की सहायता
2017	नेपाल	बाढ़	राहत सामग्री, खाद्य पैकेट, दवाइयाँ
2018	नेपाल	भूकंप पुनर्निर्माण	लगभग 1 बिलियन USD पुनर्निर्माण सहायता
2018	श्रीलंका	बाढ़/भूस्खलन	राहत सामग्री व दवाइयाँ
2019	मोज़ाम्बिक	चक्रवात इडाई	ऑपरेशन सहायता, नौसेना तैनाती
2020	मालदीव	जल संकट	1000 टन पेयजल (ऑपरेशन नीर)
2020	बांग्लादेश	चक्रवात अम्फान	राहत सामग्री
2021	नेपाल	बाढ़/कोविड संकट	मेडिकल सहायता, ऑक्सीजन
2022	श्रीलंका	आर्थिक/ईंधन संकट	4 बिलियन USD की क्रेडिट लाइन व मानवीय सहायता
2023	म्यांमार	चक्रवात मोचा	राहत सामग्री, NDRF टीम
2024	बांग्लादेश	बाढ़	खाद्य व चिकित्सा सहायता

9. आर्थिक सहयोग और विकास

यह सिद्धांत समावेशी विकास और पारस्परिक लाभ पर आधारित आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देता है, जिससे विकासशील देशों को भी प्रगति के अवसर प्राप्त होते हैं।

निष्कर्ष

“वसुधैव कुटुम्बकम्” आधुनिक वैश्विक व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में उभरता है। यह भारत की विदेश नीति में सहयोग, शांति और मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करता है। वर्तमान वैश्विक चुनौतियों के बीच यह विचारधारा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में संतुलन और समन्वय स्थापित करने में सहायक हो सकती है। इस प्रकार, यह न केवल भारतीय संस्कृति का मूल तत्व है, बल्कि वैश्विक शांति और समृद्धि के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची (References)

1.राधाकृष्णन, एस. (1923). Indian Philosophy (खंड 1). जॉर्ज एलेन एंड अनविन.

2.नेहरू, जे. (1946). The Discovery of India. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

3. भगवद गीता .गीता प्रेस.

4.भारत सरकार की विभिन्न रिपोर्टें

5.शोध-पत्र एवं पत्रिकाएँ (योजना, कुरुक्षेत्र आदि)